SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022 AMRJ Special Issue 05 Volume III (B)

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
21	आंदोलन के नवीन आयाम: गाँधी और 'राम की शक्ति-पूजा' के विशेष संदर्भ में	दुर्गा प्रसाद	105
22	अशोक चक्रधर के काव्य का मनोवैज्ञानिक चित्रण	श्रीमती रोशनी नायक	109
23	कामायनी: मिथक और दर्शन	डॉ. शीला आहुजा	113
24	'कबीरा खड़ा बाज़ार में' कविता में वर्तमान परिदृश्य	शिन्टु एलिज़बेथ शाजी	116
25	'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में व्यक्त बुजुर्गों की दयनीय स्थिति	डॉ अनीता यादव	118
26	हिंदी नवजागरण के अग्रदूत : भारतेंदु हरिश्चंद्र	डॉ. प्रकाश विष्णु कांबले	122
27	गांवों के सर्वांगीण विकास में ग्राम पंचायतों की भूमिका	डॉ सुदीप कुमावत सुमन मीणा	126
28	आभपरा शिखर ; आभ में उड़ने की अनुभूति	किरीट गुणवंतराय जोशी	130
29	हिंदी तथा मराठी के सामाजिक नाटकों में यौन-संबंध	डॉ.राहुल मोहन मराठे	134
30	21 वीं सदी की हिंदी बाल कविता में राष्ट्रीय चेतना	शैलेषकुमार बाबूभाई तलपदा	138
31	आतंकवाद: कारक, कारण और निवारण	डॉ. निशा वालिया	140
32	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में आंबेडकर दर्शन	डॉ. भानुदास भिकाजी आगेडकर सागर रघुनाथ कांबळे	145
33	राही मासूम रजा के उपन्यासों में व्यक्त साम्प्रदायिता का रंग	प्रा.डॉ. पूनम त्रिवेदी	149
34	मॉरिशस में हिंदी साहित्य	जया सुभाष बागुल	154
35	नारी विमर्श: भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों के मत	डॉ. दिप्ती सिन्हा	157
36	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की प्रासंगिकता	डॉ. नवनाथ सर्जेराव शिंदे	161
37	इक्कीसवी सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी संस्कृति	ज्योति बाई.वी,	164
38	कबीर वाणी की उपादेयता	प्रा.हिरा तुकाराम पोटकुले	167
39	अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों का सेवारत् प्रशिक्षण का अध्ययन	प्रा.डॉ. तारसिंग नाईक	169
40	ग्रामीण सामुदायिक विकासात पंचायत राजची भूमिका	प्रा.डॉ.ताराचंद माधव सावसाकडे	174
41	महात्मा फुले यांचा बहुजनवादी विचार	प्रा. डॉ. राहुल गोंगे	179
42	महात्मा बसवेश्वर - एक थोर समाजसूधारक	प्रा. डॉ. बिरादार प्रतिभा रंगराव दत्ताराम माधवराव भोसले	185
43	आदिवासी कविता आणि वास्तव	प्रा. माळवी शंकर आण्णाप्पा	190
44	स्वराज्य	प्रा. कांबळे संतोष निवृत्ती	192
45	समायोजन	प्रा. माधुरी देविदास पाटील	194
46	श्रीकांत देशमुख यांचे वृक्ष प्रेम	कोमल बालाजी भरणे	198
47	स्त्रीवादी साहित्य : स्वरूप, संकल्पना व स्त्रीवादी साहित्याचा परिचय	प्रा. डॉ. स्वाती काशिनाथ महाजन	201
48	संत मीरा बाई पर एक नजर (Urdhu)	शहाजी गजाला रिजवान	205

Scanned with CamScanner

Akshara Multidisciplinary Research Jo
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ April 2022 Special Issue 05 Volume III (B)

38

कबीर वाणी की उपादेयता

प्रा.हिरा तुकाराम पोटकुले
हिंदी विभाग
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी, तह.गेवराई जिला बीड

संत कबीरदास प्रथम यथार्थवादी कवि है जिन्होंने जातिभेद, वर्णभेद, रंगभेद, जन्म भेद जैसे अनेकों समस्याओं से हम आज भी जूझ रहे हैं उन्हीं समस्याओं को कवि ने पाँच सौ से भी अधिक वर्ष पहले जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयत्न किया था। कबीर जी ने अपने युग को अंतर्दृष्टि देकर लोगों में चेतना जगाने का कार्य किया और हिंदू धर्म के पुनर्जागरण में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। अशिक्षित, उपेक्षित, तिरस्कृत, आत्मविश्वास से हीन जनता जो संस्कृत से अपरिचित थी उनके लिए कवि ने बगावत की और मनुष्य को मनुष्य बनाने पर बल दिया। कबीर एक ओर समाज से जूझते हैं तो दूसरी ओर मनुष्य के भीतर के शत्रुओं– काम–क्रोध, लोभ –मोह से। उन्होंने मानव संबंधों का सुख ही संसार का बड़ा सुख माना है। कबीर का ब्रह्मज्ञान आचरणपरक था और ज्ञानमार्ग हृदय की पवित्रता से संबंधित था। इसी कारण कबीर की वाणी में जो कटुता, जो तीखापन ,जो व्यंग्य , जो स्पष्टवादिता है वह कबीर की सच्चाई का प्रमाण है। कबीर की मूलभूत एकता के प्रमुख पक्षधर है इसी कारण उनका काव्य आज भी प्रासंगिक है। इस आलेख के माध्यम से मनुष्य की आंतरिक स्वच्छता और बाहरी स्वच्छता पर कबीर के विचारों को प्रस्तुत करना चाहते हैं।

मन की स्वच्छता:–

संत कबीरदास कहते हैं कि बाहरी स्वच्छता से अधिक भीतरी निर्मलता का महत्व अधिक है। मानव के व्यक्तित्व पर जो दाग है वह बाहरी स्वच्छता से नहीं मिटने वाले, उसके लिए आंतरिक निर्मलता का होना आवश्यक है। कवि कहते हैं कि सुख की नींद नहीं सो, समय को विषय में नहीं लगाना चाहिए । कबीर बाहरी दिखावा करने वाले लोगों को कहते हैं कि उज्ज्वल–निर्मल कपड़े पहने पान–सुपारी गाने में मस्त हैं। इन्हें यह ध्यान नहीं है की काल इनके सर पर मंडरा रहा है।कवि का मानना है कि परमार्थ के लिये राम भक्तिकरें ताकिद काल का भय समाप्त हो जाये।

"कबीर काया मंजन क्या करैं कपड़ धोइम धोइ।
डजल हूवा न छूटिए, सुख नींदड़ी न सोइ।।"।(१)

वर्तमान समय में मनुष्य दुर्गुणों से अधिक ग्रस्त दिखाई देता है। ऐसे प्रवृत्ति के लोगों को कवि अपने दोहों में कहते हैं कि मन दुर्गुण–सदगुण सब पहचानता है। मन ही मनुष्य का बंधन है और मन ही मनुष्य का मोक्ष है। मन की दशा उस व्यक्ति की सी है जो हाथ में प्रकाश लेकर भी अंधकूप में गिर जाता है "कबीर मन जाणैं सब बात, जानत ही औगुण करै। काहे की कुसलात, कर दीपक कूवैं पड़ै।।"(२) अतः स्पष्ट है कि मन की निर्मलता महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि अनिवार्य है।

माया से दूर रहने का संदेश:

माया ही तृष्णा और आशा है, वही कनक–कामिनी के भोग की बलवती इच्छा है। माया के प्रभाव में आकर मन में आशा रखना और संचय के पीछे राम को भूल जाना मनुष्य के लिए घातक है। पापिनी माया ने समस्त संसार पर मोह–लोभ–काम' का जाल बिछाया है। जिसके मोह–पाश में फंसकर मनुष्य मूल आनंद–ईश्वर को भूल गया है। "कबीर माया पापिणी, लाया लालै लाया लोग।
पूरी किनहू न भोगी, इनका इहै बिजोग।।"(३)

कबीरदास कहते हैं कि तृष्णा,भोग–लालसा का कभी अंत नहीं होता। इसलिए आसक्ति के कारण मनुष्य दुखी हो जाता है। धन–ऐश्वर्य–,मान–सम्मान से किसी का भी मन नहीं भरता और परिणाम स्वरूप भोग्य पदार्थों को पाने की आसक्ति के कारण मनुष्य रोता है। इसीलिए कबीर कहते हैं कि माया से विपरीत होकर रहने में ही मनुष्य को शांति मिल सकती है।

वर्तमान समय में हम देखते है कि माया –तृष्णा –आशा की बेली बढ़ती जा रही है। इस बेली का वर्तमान जगत के साथ इस प्रकार का नाता बन गया है कि इससे मुक्ति संभव नहीं है। इसीलिए कबीरदास संसार, माया ,मोह, तृष्णा की असत्यता पर विचार करते हुए कहते हैं कि संसार जन्म के सुख और मरण के दुख का घर है। कवि का मानना है कि यह जगत झूठा है क्योंकि यहां सुख और दुख का द्वंद्व है–

"कबीर इस संसार का, झूठा माया मोह।
जिहि घरी जिता बधावणां, तिहि घर तिता अंदोह।।"(४)

कलियुगी स्वामी– सन्यासी पर व्यंग्य:–

संत कबीरदास जी ने कलियुग के स्वामी सन्यासियों का स्वांग, उनकी तृष्णा– लोभ को समाज के समक्ष रखकर उन पर व्यंग्य किया है। स्वामी भेष बनाकर संसार को आसानी से धोखा देते हैं। कवि का मानना है कि भगवद्भक्त होना कठिन है क्योंकि इसके लिए माया– मोह, लोभ –तृष्णा को त्यागना पड़ता है। कलियुग में हम देखते हैं कि स्वामी लोगों का आचरण, व्यवहार किस प्रकार का है। वह स्वयं को स्वामी संन्यासी कहकर मठ के मालिक बन गए हैं। कबीरदास लोभ से ग्रस्त कलियुगी स्वामी सन्यासी पर व्यंग करते हुए कहते हैं–

"कबीर कलि का स्वामी लोभिया, मनसा धरी बधाइ।
देहि पईसा ब्याज कौं, लेखा करता जाइ ।।"(५)

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
April 2022 Special Issue 05 Volume III (B)

वर्तमान समय में स्वामी सन्यासियों की तृष्णा इतनी बढ़ गयी है कि पैसे के चक्कर में ब्याज पर धन देने लगे है और उसका लेखा–जोखा भी रखते हैं। अगर इसमें कोई चूक जाता है तो उसका शारीरिक शोषण और मानसिक शोषण भी किया जाता है। कबीर जी ने स्वामियों के लोभ से संग्रह की प्रवृत्ति और फिर धनवृद्धि वृत्ती पर करारा व्यंग्य किया है।

"कबीर ग्यानी तौ निडर भया, मानै नांही संक।
इंद्री केरे बसि पंड्या,भूजै विषै निसंक।
कबीर ग्यानी मूल गंवाइया, आपण भये करता।
ताथै संसारी भला, मन में रहै डरता।।"(६)

कबीर जी नहीं उक्त साखियों में ज्ञानियों, स्वामियों पर व्यंग्य किया है। यह लोग अहंभाव के कारण स्वयं को ही भगवान मानते हैं और वह अपने अंदर के मूल आत्मतत्व को ही गवा बैठे हैं। संसारी ग्रहस्थ व्यक्ति भी मन में डरता है परंतु वैरागी –सन्यासी निशंक होकर भोग करता है। जब किसी का भी भय नहीं होता तो मनुष्य व्यभिचार की ओर आकृष्ट हो जाता है और अपने इंद्रियों पर काबू नहीं कर पाता। इसी प्रकार का व्यवहार वर्तमान जगत में हमें दिखाई दे रहा है।

नर–नारी विषयक जीवन दृष्टि:–

कबीरदास नर– नारी जीवन दृष्टि की प्रमुखता को बताते हुए कहते हैं कि सकाम–भोगेच्छा से किया गया कार्य निंदनीय है। निष्काम भाव से किया गया कार्य कभी भी बंधन नहीं बनता, यही नर–नारी संबंध का मूल है । कामिनीबुरी नहीं बुरी है तो आसक्ती। इस संदर्भ में कवि लिखते हैं –"नर–नारी सब नरक है, जब लग देह सकाम। कहै कबीर ते राम के जे सुमिरे निहकाम।।"(७)

'कथनी और करनी में समानता'

मनुष्य के विचारों में जीवन में कथनी और करनी में समानता के साथ साथ भेदभाव के अभाव का होना महत्वपूर्ण है। हम सबको उस सहज का ही रुप मानना चाहिए, जैसे की सबके साथ न्याय, स्नेह, समानता हो।कबीर मनुष्य को सचेत करके कहते हैं– 'कबीर पूंजी साह की, तू जिनी खोवे ख्वार। खरी बिगूचनि होरगी, लेखा देती बार।।"(८)

कबीर कहते हैं कि मानव को जो शरीर मिला है वह परमेश्वर की देन है इसलिए इसे सकर्मो, सद्विचारों, सद्भावों और परमार्थ में लगाना चाहिए। मनुष्य जीवन सबकी सेवा के लिए है। अगर मनुष्य हिंसा करके या किसी को मानसिक यातना देता है तो उसका जीवन बर्बाद हो जाएगा। कबीर आचरणभ्रष्ट, शाक्तों, पाखंडीयों, कलयुग के राजनेताओं पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं–

" कबीर जैसी मुख तैं निकसै, तैसी चालै नाहीं।
मनिष नहीं स्वांन गति, बंध्या जमपुरि जाहिं।।"(९)

कवि का मानना है कि जिसकी कथनी और करनी में भेद है उसकी मौत स्वान की है। वह मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है, ऐसे पाखंडी मृत्यू के पश्चात विष्णुधाम नहीं बल्कि नरक में जाते हैं। आज के राजनीतिक माहौल में कबीर जी की यह पंक्तियां एक यथार्थ सत्य है।

संतवाणी मनुष्य के मन में संयम, संतोष, अभ्यास, मानवता को जगाने का कार्य करती हैं। संत साहित्य को युवाओं को बताना होगा ताकि वह शील और संयम, संतोष, मानवता को समझ सके। मनुष्य जीवन में सुख– दुख में धैर्य और संयम का होना अत्यंत आवश्यक है। कबीरदास ने शील को सभी रत्नों से श्रेष्ठ माना है। संतो ने कभी भी संचय की बात नहीं कही जिसके कारण मनुष्य पीड़ा को प्राप्त करता है। इस बाजारवाद में चल रहे मोह, स्वार्थ से बचने के लिए संत साहित्य की उपादेयता है। संत साहित्य मनुष्य को कथनी और करनी में समानता रखने के लिए कहता है। समस्त संत काव्य नैतिकता का प्रस्तावक है। संत साहित्य हर युग में ही नहीं बल्कि युग के हर क्षण में मनुष्य को दीपक की भाँती अंधेरे से बाहर निकालता है। हमारा संत साहित्य मानवधर्म, शुद्ध आचरण, कर्तव्य परायणता का काव्य है। संतवाणी की उपादेयता आज भी सर्वाधिक है। मानव जाति के विकास में कबीर की विचारधारा उपयोगी है। इस दृष्टि से कबीर एक दृष्टा कवि है जिन्होंने अपने युग को अंतर्दृष्टि दी और लोगों में चेतना जगाई। हिंदू धर्म के पुनर्जागरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। समाज, धर्म और व्यक्ति के विकास में जिस संतुलन की अपेक्षा थी उसकी पूर्ति भी कबीरदास जी ने की है। कबीर की वाणी में जो कटुता और स्पष्टवादिता है वही उनके काव्य की सच्चाई का प्रमाण है, जो वर्तमान समय में भी प्रासंगिक और उपयुक्त है। अतः संसार में जहाँ–जहाँ जिस स्तर पर भी भेद है उसे कबीर वाणी से संदेश लेकरं मिटाया जा सकता हैं।

संदर्भ सूची:–

१) कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.१३७
२)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.१४८
३)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.१६५
४)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.१७६
५)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.१८४
६)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.२०४
७)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.२००
८)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.२०६
९)कबीर ग्रंथावली सटिक–डॉ.हरिहर प्रसाद गुप्त,पृ.१६५

□ □ □

Scanned with CamScanner